

"आत्मानं सततं रक्षेत्।"
अर्थ - आत्मा की सर्वदा रक्षा करनी चाहिए।

अंदर पढ़ें

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की लेखनी से

- मेरे उद्धार, रक्षा और कल्याणकर्त्ता परम पूजनीय महामान्य श्री देवगुरु जी

अतीत के झरोखे से

- हमारे देश की नैतिक दुर्दशा का परिणाम

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र - 4

- श्रद्धेय श्रीमान् बख्शी रत्न चन्द जी जौहर

पशु जगत के संबंध में व्रत (14 सितम्बर 2021) पर विशेष

- पशुओं के प्रति मनुष्यों के दुराचार
- पशु जगत् से हम हैं आए (परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित गीत)

परलोक के संबंध में व्रत (06 अक्तूबर 2021) पर विशेष

- मृत्यु के समय सूक्ष्म शरीर कैसे बनता है?
- सेवा प्रसंग

मल्लेका सत्संग

प्रेरणादायक घटनाएं

- सच्ची सम्पत्ति
- लिंकन का फार्मूला

बच्चों का कॉर्नर

- भगवान देवात्मा के जीवन से - 3
- चूहे और बाघ की कहानी
- मज़ेदार बूझो तो जानें (पहेलियां)
- ज़रा हंसलो खिलखिलाकर (चुटकुले)

(पृष्ठ 15 का शेष)

पशुओं के प्रति मनुष्यों के दुराचार

(15) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं को गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि के हानिकारक प्रभावों से रक्षा न करके उन्हें कई प्रकार का क्लेश देते हैं।

(16) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं के बूढ़े हो जाने वा किसी कारण से काम के योग्य न रहने पर, रोग के समय उनकी कोई चिकित्सा वा शुश्रूषा आदि नहीं करते, अथवा उन्हें वध कर देते हैं।

यहां पर यह प्रश्न हो सकता है कि क्या मनुष्य के लिए किसी प्रकार के किसी पशु को कभी और किसी अवस्था में आघात पहुँचाना वा वध करना उचित नहीं है?

इसके उत्तर में उस साधारण नियम का स्मरण करा देना यथेष्ठ है कि जो सुसभ्य मनुष्यों में परस्पर के सम्बन्ध में प्रचलित है। और यद्यपि अभी इस नियम में भी बहुत उन्नति की आवश्यकता है, तथापि उसका सार भाग ठीक है, अर्थात् अपनी जान वा अपने माल वा अन्य जनों की जान वा उनके माल पर यदि कोई आक्रमण करे, तो उस पर वहां तक आघात पहुँचाना उचित वा विधेय है, जहां तक उसकी रक्षा के लिए, ऐसा करना आवश्यक हो, उससे अधिक नहीं। इस नियम के अनुसार आवश्यक होने पर मनुष्य के लिए अपने किसी आक्रमणकारी मनुष्य को वध कर देना भी विधेय हो सकता है। पशु जगत् के सम्बन्ध में भी साधारणत: यही नियम समझना चाहिए। इस नियम के अनुसार खटमल, पिस्सू, मच्छर, सांप, बिच्छू, भिड़, भेड़िया और बाघ आदि नाना प्रकार के रक्त पाई और हिंस्रक और विविध प्रकार के रोग-उत्पादक कीटाणुओं को **आवश्यक** होने पर वध तक करना विधेय है।

(पृष्ठ 20 का शेष)

गुल्लक अभियान से 26 मरीज़ों की आर्थिक मदद

इलाके खोजे, जहां ज़्यादा से ज़्यादा लोग मदद कर सकें। और फिर गुल्लक रखना शुरू की। इसमें लोगों से कैंसर मरीज़ों के इलाज के लिए दान की अपील की गई। ओझा कहते हैं कि नेक काम के लिए लोगों से मदद मांगने में उन्हें किसी तरह की शर्म या लिहाज महसूस नहीं होती। अब तो वे सार्वजनिक कार्यक्रमों के अलावा निजी कार्यक्रम जैसे विवाह, जन्मदिन में भी मदद मांगने के लिए जाने लगे हैं। कुछ लोग तो खुद उन्हें कार्यक्रमों में चैरिटी के लिए आमंत्रित करने लगे हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 7

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सितम्बर - 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की लेखनी से

मेरे उद्धार, रक्षा और कल्याणकर्त्ता परम पूजनीय महामान्य श्री देवगुरु जी

बहुत बहुत दीनता और कृतज्ञता से भर कर आपकी जीवनदायक चरणधूल में सिर रखकर आशीर्वाद प्रार्थना करता हूं और आपकी और आपके परिवार की कुशल चाहता हूं।

महायज्ञ स्थापन करके हम आत्माओं के कल्याण का मार्ग खोल देने वाले भगवन्! इन दिनों में आपके संबंध में नाना प्रकार के साधन करने से मेरा जो कुछ कल्याण साधन हो रहा है, उसका वृत्तांत आप तक पहुंचाकर और आपके परम कल्याणकारी रूप के निकट होकर अपना और भी हितसाधन करना चाहता हूं।

प्रति दिन दो बार श्रीमान् पण्डित हरनारायण जी सम्मिलित साधन कराते रहे हैं, जिन में आपके उपकारों को स्मरण करने के भिन्न आपके साथ अपने अपने संबंध की अवस्था पर विचार करने के लिए वह बहुत अमूल्य ज्योति का दान देते रहे हैं। इन साधनों के द्वारा औरों को भी बहुत लाभ पहुंचा है, परन्तु मेरे भीतर आपकी उच्च ज्योति की किरणें पहुंचकर आपके उपकारों और उसके मुकाबिल में आपके संबंध में मेरी अति हीन दुर्बल और महा नीच और अधम अवस्था को जिस प्रकार मुझ पर प्रगट कर रही हैं, उससे मेरे भीतर एक नई गति उत्पन्न हो रही है। जहां एक ओर आपके अमूल्य उपकारों को सामने लाकर और आप को सबसे बढ़कर अपना उपकारी अनुभव करके आपके श्री चरणों में कई कई बार दिन और रात में झुकता हूं, वहां ऐसे परम हितकर्ता के संबंध में अपने भीतर श्रद्धा और आकर्षण का बहुत थोड़ा भाव वर्तमान देखकर बहुत दुखी हो रहा हूं। मैं जो आपको छोड़कर अन्य अस्तित्वों के गिर्द घूमता रहता हूं और दिन रात में कितने कितने काल तक आप के रूप को पाने और फैलाने के परम हितकर लक्ष्य को छोड़कर, शरीर के नाना सुखों की अभिलाषा, किसी छिपी हुई वासना की नीच प्रेरणा, फिज़ूल भय और फिज़ूल हिसाब किताब

की चिन्ता आदि में भ्रमण करता रहता हूं, उन नीच गतियों से निकलने और अपने अस्तित्व को पूर्ण रूप से आपको हि ढूंढने, खोजने, पाने और फैलाने के साधनों और संग्रामों में प्रति मुहूर्त प्रवृत्त रखने के योग्य बनाने के लिए आप की ज्योति और शक्ति के लाने वाले साधन करता हूं। आप के संबंध में नाना लेख पाठ करता हूं। कल से दो बार आप के पिछले महा व्रत का उपदेश पाठ कर चुका हूं, संगीत गाता हूं, श्री पण्डित जी के चरणों में बैठता हूं, उनकी कोई न कोई सेवा करता हूं। उच्च ज्योति और उच्च बल लाभ करने के लिए (कि जिसमें मैं और सब तरफों से हटकर केवल आपका और पूर्ण रूप से आपका ही बन जाऊं) आशीर्वाद प्रार्थना करता हूं। दूसरे सेवकों के हृदयों को आपके धर्मरूप की ओर मोड़ने और आपके साथ जोड़ने के लिए संग्राम और यत्न करता हूं, और मैं देखता हूं, कि इन साधनों से मुझे बहुत लाभ हो रहा है, आपके परम हितकर धर्म रूप को अधिक से अधिक उपलब्ध करके आपके निकट होता हूं, आपकी ज्योति और शक्ति को अधिक से अधिक लाभ करने और फैलाने के लिए उत्साह पाता हूं। जिन सेवकों के भीतर आप के जीवन का प्रकृत उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा, उनकी अवस्था को देखकर बहुत दुखी होता हूं, उस महान उद्देश्य को अपने और दूसरों के जीवन में जहां तक सम्भव हो, पूरा होने के लिए दिन में कई बार सोचता हूं, और इस सारे संग्राम से अपना परम कल्याण अनुभव करके आप को धन्य धन्य कहता हूं, और ऐसे संग्राम की उन्नति के लिए आप का आशीर्वाद दान मांगता हूं।

आपके आशीर्वाद का भिखारी,
देवत्व सिंह।

आवश्यक सूचना

धर्म जीवन के सभी पाठकों से सविनय निवेदन है कि वे निम्न लिखित पते पर लिख कर एवं +91-8146553154 पर Whatsapp करके सूचित करने की कृपा करें कि वे इस पत्रिका को भविष्य में भी प्राप्त करना चाहते हैं कि नहीं ।

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022. Phone : 0172 - 4638229, 2716914

यदि आपने इस पत्रिका का चंदा न दिया हो तो इसका वार्षिक चन्दा जो मात्र 50 रू० वार्षिक है, साथ दिये अकाउंट में जमा करवाने की कृपा करें तथा अपना पूरा नाम, पता, फोन नं० के साथ ऊपर दिये पते या Whatsapp पर भेज दें ।

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL
Central Bank of India,
Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919
IFSC Code : CBIN0280414

आपके सहयोग की अपेक्षा रहेगी । धन्यवाद

अतीत के झरोखे से

(120 वर्ष पहले 'जीवन पथ' में छपा एक लेख)

हमारे देश की नैतिक दुर्दशा का परिणाम

जिस समय भारतवर्ष का महत् राज्य बड़े बड़े मुसलमान और हिन्दू राजाओं के हाथों से निकल निकल कर अंग्रेज़ों के हाथ में जा रहा था, उस समय हमारे देश वासियों की जो नैतिक दुरावस्था थी, और जैसी भयानक अराजकता हमारे देश में छाई हुई थी, उसका एक इतिहास लेखक ने इस प्रकार वर्णन किया है:-

"मुसलमानों और हिन्दुओं के हाथ से राज्य का निकल जाना किसी अदृश्य घटना के कारण न था; किंतु इसका स्पष्ट कारण यह था, कि (उस समय) हमारी सारी जाति - क्या हिन्दू और क्या मुसलमान - नैतिक विचार से घोर नीच अवस्था को प्राप्त हो चुकी थी। लक्ष्य लक्ष्य दुर्बल प्रजा के लाभ और हानि का कुछ विचार न करके बलवान् लोग उन्हें पैरों के तले रौन्दते थे। जिसे कुछ भी देश में किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त था, वह उसके द्वारा केवल अपने लाभ के लिए ही खूब यत्न करता था। एक दूसरे को विनष्ट करने के लिए साज़िशें होती थीं, धोखे बाज़ी और लालच, प्राण हरण, अत्याचार, विश्वास घातकता, राज्य द्वेष और मिथ्या प्रवंचनायें, हानि जनक रुचियां, मारधाड़, लूट खसोट, सब प्रकार के पाप और अपराध, वस्तुत: स्वयं अराजकता और उस के सब महा भयानक साथी - हमारे देश पर पूर्ण अधिकार रखते थे, और देश में चारों ओर हाहाकार की ध्वनि उठ रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, कि मानो नरक लोक से सारी नीचता और पाप की शक्तियों को छुट्टी मिल गई है, कि दिल खोल कर हमारे देश का सत्यानाश करें, और विश्व के मंगल प्रबन्ध को तोड़ फोड़ कर चूर कर दें।"

ऐसी नैतिक दुरावस्था के हो जाने पर किसी देश और जाति का दिनों दिन नीचे से नीचे जाना और विनष्ट होना अवश्यम्भावी है। जो लोग हमारे देश का सच्चा हित और कल्याण चाहते हों, उन्हें हमारे देश की उपरोक्त दुर्दशा की भयानक छवि को सम्मुख लाकर यह उपलब्ध करना चाहिए कि जब तक हमारे देशवासियों की नैतिक और आध्यात्मिक अवस्था उच्च नहीं होती तब तक हमारा कोई प्रकृत हित और कल्याण नहीं हो सकता। हमारे देश के सच्चे हित कर्त्ता श्री देवगुरू जी ऐसे ही महोच्च कार्य के द्वारा हमारे देश वासियों को उन्नत करने का यत्न कर रहे हैं। धन्य हैं वे जन, जो उनके ऐसे कार्य की महानता और विशेषता को देखते और उपलब्ध करते हैं, और उसमें अपनी योग्यता के अनुसार योग वा सहाय देकर अपना जीवन कृतार्थ करते हैं।

- - - -

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र - 4

श्रद्धेय श्रीमान् बख्शी रत्न चन्द जी जौहर

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र श्रीमान् बख्शी जी आज के देव समाज से संबंधित जनों के लिए अज्ञात व्यक्ति हैं। आज हमें ऐसे महान व्यक्तिवों को स्मरण करने का अवसर प्राप्त हुआ है।



हीरे ने रत्न को जन्म दिया

श्रीमान् बख्शी रत्न चन्द जी जौहर का जन्म सन् 1879 ई० को हुआ। उनके श्रद्धेय पिता जी का नाम श्रीमान् हीरा नन्द जी जौहर और श्रद्धेया माता जी का नाम श्रीमती मथुरा देवी जी था। ये दोनों ही धर्म की अच्छी पूंजी के मालिक थे जिस कारणवश श्रीमान् जी को भी बहुत अच्छी धर्म की पूंजी प्राप्त हुई। वे सिख गुरुओं की वाणी का पाठ करने के अतिरिक्त हिन्दुओं के तीर्थ स्थान, जैसे हरिद्वार और बद्रीनाथ इत्यादि पर जाकर स्नान करते और धन का दान करके तृप्ति पाते थे। उनमें गरीबों और मोहताजों की सहायता करने का बहुत सुंदर भाव वर्तमान था। उनके भीतर सात्विक जीवनधारियों के प्रति बहुत श्रद्धा थी तथा किसी भी सात्विक जीवन को देखकर उनका हृदय फड़क उठता था। उनके पिता जी अपनी एक विधवा बहन को अपने पास रख कर सारी आयु उनका भरण पोषण करते रहे। अब आप समझ ही सकते हैं कि किस प्रकार से श्रीमान् बख्शी जी को बीज रूप में कैसी सुन्दर धर्म की पूंजी प्राप्त हुई।

संसार के गहरे अंधकार में भटकते हुए एक व्यक्ति को भगवान देवात्मा की शरण प्राप्त होना

श्रीमान् बख्शी जी धर्म के विषय में बहुत जिज्ञासा रखते थे। उसके बावजूद अन्य इंसानों की तरह वह भी धर्म के असल मार्ग से भटक रहे थे और धर्म मार्ग की तलाश में जगह जगह अनेक धर्म मतों में जाते थे परंतु उन्हें कहीं भी तसल्ली नहीं मिलती थी। वह सब धर्म मतों से बुरी तरह से निराश हो चुके थे।

संयोग से जब वह अपनी धर्म पत्नी श्रीमती माया देवी जी के साथ रावलपिंडी में रहते थे, उन्हें एक मित्र की प्रेरणा से जो देव समाज की जीवनदायनी संगत में आ चुके थे, और आपके पड़ोसी थे, देव समाज की एक सभा में सम्मिलित होने का अवसर

मिला। बस फिर क्या था? जिस सत्य धर्म के जीवन दायक चश्मे की उन्हें तलाश थी वह उन्हें मिल गया। सौभाग्य से यह सभा श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी ने करवाई थी। जो जीवन मृग तृष्णा की न्याई तथाकथित अनेक धर्म समाजों और धर्म मतों में भागा भागा और मारा मारा फिरता था परन्तु जिसे धर्म की प्यास को बुझाने के लिए कहीं से भी पानी प्राप्त न होता था, उसे स्वच्छ पानी का चश्मा मिल गया। आत्मिक जीवन की प्यास बुझने का समय आ गया।

श्रीमान् जी की श्रद्धा की सुंदर पूंजी यूं ही अकारथ चली जाती यदि उन्हें रावलपिंडी में श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की सभा में अपने साथी के साथ सम्मिलित होने का अवसर न मिलता। उस पहली सभा में ही उनका "दिल पकड़ा गया"। श्रीमान् जी की इस सभा ने भगवान की विचित्र ज्योति को अपनी विशेष योग्यता द्वारा श्रीमान् बख्शी जी तक उसी प्रकार पहुंचाने का काम किया, जिस प्रकार एक एक दयालु और योग्य डॉक्टर एक बेहोश और मृत्यु के निकट पहुंचे हुए रोगी को अपनी विशेष योग्यता और संग्राम से उस पूर्णत: असहाय अवस्था से निकाल लेता है। उन्हें इस सभा में योग देने से यह अनुभव हुआ कि उन्हें यहां से धर्म की कोई सच्ची राह प्राप्त हो सकेगी।

श्रीमान् जी लिखते हैं "हां, निकट था कि मैं विनाश की ओर चला जाऊं, क्योंकि मैं इन कथित धर्म मतों में फिर फिरा कर इतना निराश हो चुका था कि धर्म को ही एक ढकोसला या स्वांग समझने लगा था। जहां कहीं मैं गया, वहां ही बहुधा उनके बड़े बड़े नेताओं को उपदेश और भाषण तो बहुत विद्वता पूर्वक देते देखता और मूल विषयों पर बोलते सुनता परन्तु दैनिक जीवन के विचार से उन्हें एक या दूसरे प्रकार के विचार से झूठा, कपटी और कई मोटे पापों और बुराईयों में ग्रस्त पाता। अंत में थक थका कर मैंनें यह निश्चय कर लिया कि अब किसी धार्मिक सोसाइटी या समाज में नहीं जाऊंगा और अपनी ओर से जो कुछ बन पड़ेगा किसी का भला कर दिया करूंगा। परमात्मा का नाम जप लिया करूंगा। ओह! कैसी कृपापात्र अवस्था! मुझे यह होश कहीं से भी न मिलती कि जीवन रक्षा के सामानों बिन जीवन किस विध बचाउंगा।"

मरी पर्वत पर भगवान देवात्मा के साक्षात दर्शन करने का अति दुर्लभ अधिकार प्राप्त करना

6 जून सन् 1903 का सौभाग्यशाली दिन था। उस दिन श्रीमान् बख्शी जी और एक मित्र रावलपिंडी से कुछ फासला साईकलों पर तथा कुछ फासला पैदल चलकर परम् पूजनीय भगवान के दर्शन करने और 'स्वदेश व्रत' की विशेष सभाओं में योग देने मरी पर्वत पहुंच गए जहां परम् पूजनीय भगवान देवात्मा विराजमान थे। श्रीमान् जी उस समय के विषय में लिखते हैं "मेरा हृदय आपके (भगवान देवात्मा के) क्या बाह्यक और क्या आंतरिक पवित्र सौन्दर्य को देखकर ऐसा खिंच गया कि जैसे लोहे के टुकड़े को चुंबक खैंच लेता है और फिर वह उससे परे नहीं जा सकता। वह संबंध

जो उस दिन स्थापन हुआ, दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया और मेरे आत्मिक सौभाग्य का द्वार खुलता ही चला गया।"

संबंधियों की ओर से विरोधिता

जैसा कि अक्सर होता है ज्यों ज्यों श्रीमान् बख्शी जी भगवान के निकट होते चले गए त्यों त्यों उनके संबंधियों की तरफ से विरोधिता भी आरंभ हो गई। रावलपिंडी में रहते हुए वे भगवान देवात्मा के श्रद्धालु सेवक श्रीमान् पं० दीनानाथ जी बाली के सम्पर्क में रहे। देव समाज के अति विलक्षण प्रभाव से श्री बाली जी ज़ात पात, छूत छात और ख़ान पान के मिथ्या बंधनों से मुक्त हो चुके थे। लोग इन्हें किरानी (ईसाई) कहते थे। श्रीमान् बख़्शी जी की धर्म पत्नी श्रीमति माया देवी जी ने भी इन्हें पथ भ्रष्ट समझा और कुसंस्कार में फंसे होने के कारण अपने धर्म पति को भी किरानी ही समझने लग गई। वह इन्हें अपने चौके से बाहर और अपने बर्तनों से अलग बर्तनों में खाना देने लग गई। इसके अलावा उन्होंने इन्हें धर्म के शुभ मार्ग से हटाने का ज़ोरदार प्रयास करना आरम्भ किया। उन्होंने जब देखा कि उनकी अपनी तो कोई पेश नहीं चलती तो अपने ससुर को लिखवाया कि "आपका बेटा किरानी हो गया है। आप आकर इन्हें इस रास्ते से मोड़ें अन्यथा वह हाथ से जाते रहेंगे और आपको फिर अफ़सोस के सिवाए कुछ न बन पड़ेगा।" श्रीमान् जी के श्रद्धेय पिता जी और उनकी बुआ जी भी लगातार श्रीमान् बख्शी जी को अपने धर्म मार्ग से हटाने का प्रयास करते रहे।

इसके बाद सन् 1904 में श्रीमान् जी ने अपनी पत्नी श्रीमती माया देवी जी को पहले फिरोज़पुर और फिर बठिंडा नारी आश्रम में रहने के लिए तैयार किया जिससे वह उच्च संगत में रहकर अपने कुसंस्कारों से निकल सकें। इस संगत में रहने से उनके गहरे कुसंस्कार और मिथ्या विश्वास नष्ट हो गए। उनमें सेवा भाव तथा अन्य सद्गुण विकसित हुए और अंतत वह भगवान देवात्मा की सेविका भी बन गई।

मौंटगुमरी में तबदीली हो जाने का सौभाग्य

परम् पूजनीय भगवान देवात्मा को जब फिरोज़पुर में एक के बाद एक अनेक फ़ौजदारी और सिविल मुकद्दमों के द्वारा महा भयानक यंत्रना दी जा रही थी और उनके पास न कोई धन या जन की सप्पोर्ट थी और उन्हें ऐसे कठिन और दुखदायी हालात में अपना प्रैस तक बेचना पड़ा था, अपने मकानात किराये पर देने पड़े थे और लाहौर को छोड़कर मौंटगुमरी जैसे अत्यंत गरम स्थान में एक झोंपड़ी बनाकर रहना पड़ा था। ऐसे समय में भगवान पानी में पैर रखकर और सिर पर गीला तौलिया रखकर अपना अत्यंत कठिन समय गुजारने के लिए मजबूर थे। यहां ही परम् पूजनीय भगवान की अनुरागी शिष्या डॉ. कुमारी प्रेम देवी जी का अति दुखदायी देहांत भी हुआ। यहां भगवान देवात्मा ने 'एकता आश्रम' के नाम से अपना एक मकान भी बनवा लिया था और वहीं पर देव समाज का आठवां वार्षिक उत्सव भी हुआ। इस संदर्भ में मौंटगुमरी देव समाज के इतिहास में एक बहुत

स्मरणीय स्थान है। श्रीमान् बख्शी जी अपनी नौकरी से छुट्टी ले लेकर लाहौर में पूजनीय भगवान् की संगत का अत्यंत कल्याणकारी अवसर प्राप्त करते रहते थे। सन् 1906 में श्रीमान् बख्शी जी की तबदीली लाहौर से मौंटगुमरी हो गई। परिणामवश वे भगवान देवात्मा और अन्य कर्मचारियों के साक्षात् संगत से लाभ उठाने से वंचित हो गए फिर भी उन्होंनें मौंटगुमरी में तबदील हो जाना भी अपना सौभाग्य समझा। उन्हें वहां जिस मकान मालिक के घर में रहने का अवसर हुआ, उसके सामने उसका वह मकान भी था कि जिसमें परम् पूजनीय भगवान देवात्मा ठहरते रहे थे। श्रीमान जी लिखते हैं "वहां के इन सारे हालात ने सूक्ष्म रूप से मेरे हृदय में विशेष रूप से अपना कार्य करना आरम्भ किया।" श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी भी वहां इनके पास पधारे और उन्होंने कृपा करके इन्हें साथ ले जाकर उस जगह के दर्शन भी कराए जहां पर श्रद्धेया जी की स्थूल देह का दाहसंस्कार किया गया था और जहां पर नंगे पांव चलकर पूजनीय भगवान पधारे थे।

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी ने श्रीमान् बख्शी जी को श्रद्धेया जी के जीवन चरित्र के न केवल पाठ बल्कि उसकी प्रतिदिन नकल करने के साधन में लगाया था। श्रीमान बख्शी जी को संसार और उसके सुखदायक सामानों आदि की ओर से उखाड़ने और परम् पूजनीय देवात्मा के कार्य की ओर आकृष्ट करने में सूक्ष्म रूप से स्वयं श्रद्धेया जी का भी बहुत बड़ा हाथ था।

प्रतिज्ञा निभाने का महत्व

श्रीमान् जी के कोई संतान न थी। इस कारण उनके पारिवारिक जन उन पर दूसरा विवाह करने के लिए बहुत अधिक ज़ोर डालते रहते थे ताकि उनके परिवार का सिलसिला आगे चला चले। परन्तु परम् पूजनीय भगवान का सेवक होने के कारण वह तो यह शुभ प्रतिज्ञा कर चुके थे कि "एक पत्नी के इस संसार में जीते जी दूसरा विवाह न करूंगा।" श्रीमान जी इसके विरूद्ध जाने में अपनी मृत्यु अनुभव करते थे।

साधनशीलता का एक दृश्य

मौंटगुमरी में अपने निवास के दिनों के विषय में अपने साधनों और सेवा के कामों का वर्णन करते हुए श्रीमान् बख्शी रत्न चंद जी लिखते हैं, "मेरे साधन बहुत अच्छी प्रकार से चलते थे। मैंने साधन के लिए अपने मकान के ऊपर की मंजिल में एक अलग कमरा विशेष रूप से सजा कर रखा हुआ था कि जिसमें परम पूजनीय भगवान की छवि के अतिरिक्त कई एक उच्च कर्मचारियों तथा श्रद्धेया कुमारी प्रेम देवी जी, श्रीमान् देवत्व सिंह जी, श्रीमान पण्डित हरनारायण जी, श्रीमान् भाई अमर सिंह जी आदि की छवियां लगाई हुई थीं और पूजनीय भगवान और समाज की सब पुस्तकें वर्तमान थी। प्रात: काल उठकर और आवश्यकताओं से निवृत होकर मेरा पहला काम अपने साधन को नियमित रूप से पूरा करना होता था, जिसमें कई एक गीतों और देव स्तोत्र आदि के गान, प्रणाम,

भेंट, पाठ और विचार के अतिरिक्त लिखने का साधन करता था।"

पर सेवा भाव का एक उदाहरण

"इन्हीं दिनों वहां प्लेग का बहुत ज़ोर हो गया और बहुत से लोग शहर को छोड़कर बाहर निकल आए। मैं भी अपने दफ्तर से आने के बाद ऐसे लोगों तक पहुंचकर उनकी दवाई दारू या अन्य सेवा करने के लिए जाता। यद्यपि प्लेग का काफी डर लोगों के भीतर बैठा हुआ था और निकट के संबंधी भी सेवा करने से भाग जाते थे, परन्तु मुझे पूजनीय भगवान की कृपा से ऐसी सेवा करके तृप्ति मिलती थी।"

ईमानदारी और कर्तव्य परायणता की एक मिसाल

परम् पूजनीय भगवान देवात्मा की कृपा से श्रीमान् जी ईमानदारी और कर्तव्य परायणता की ऐसी शानदार मिसाल बन गए थे कि जिसके आगे उनके अंग्रेज़ अफ़सरों तक को भी झुकना पड़ता था। उनके अंग्रेज़ अफ़सर भी उनकी अपने काम में लगन और उनके आचरण से अत्यंत प्रभावित हो जाते थे और उन पर पूरा भरोसा करते थे। एक भारतीय के लिए यह एक बहुत गर्व की बात थी। आज से लगभग 110 - 15 साल पहले के समय के संबंध में श्रीमान् जी का कहना है "यदि मेरे स्थान में कोई और होता तो उसने ऐसे अवसर पर जबकि लाखों रुपये के ठेकेदार काम कर रहे थे, सांसारिक विचार से हाथ खूब रंगे होते। हज़ारों रुपये कमाकर अपने और अपने संबंधियों के लिए सांसारिक आराम और सुख के सामान एकत्र किए होते, परन्तु परम् पूजनीय भगवान की अपार कृपा से मेरे हृदय तक उनके देव प्रभाव पहुंच चुके थे। उन्होंने मुझे कभी ऐसा करने नहीं दिया और इन असार सुखों और सामानों के पीछे अपने आत्मिक सार जीवन का नाश हमेशा अत्यन्त भयंकर रूप में दिखाया"। इसलिए जहां उनके चारों ओर दूसरे सभी लोग खूब चाव और उत्साह से ऐसे काम (रिश्वतखोरी) में लगे हुए थे, वहां वे इन हालात में रहकर और अपने आपको भगवान देवात्मा के महान कार्य में सेवाकारी होता हुआ न देखकर जितना दुखी और बेठिकाने अनुभव करते थे, उनकी इस व्यथा का अनुमान हम लोगों के लिए संभव ही नहीं है।

गुरू मिशन मे सेवाकारी होने के लिए बड़ी नौकरी बिल्कुल फीकी पड़ गई ।

श्रीमान् बख्शी जी नौकरी के कारण परम् पूजनीय भगवान देवात्मा की तथा अन्य उच्च आत्माओं की लगातार संगत न मिलने से बेहद परेशान रहते थे। उनमें देव प्रभाव पाने की बहुत अधिक तड़फ थी। वह बार बार नौकरी से छुट्टी लेकर भगवान देवात्मा के श्री चरणों में पहुंचने का प्रयास करते थे।

उनकी यह इच्छा कि वह अपनी समस्त शक्तियां परम् पूजनीय भगवान देवात्मा के निराले मिशन में लगा दें अत्यन्त प्रबल और तीव्र होती गई। उन्होंने बार बार श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी के माध्यम से भगवान के श्री चरणों में प्रार्थना की कि उन्हें बहुत उच्च वेतन वाली नौकरी छोड़कर देव धर्म मिशन में सेवाकारी होने का अवसर दें, परन्तु उन्हें अनेक वर्षों तक ऐसी अनुमति नहीं मिली। इस दौरान वह अपनी सरकारी नौकरी से बार

बार कभी आधे वेतन पर, कभी चौथाई वेतन पर और कभी बिना वेतन के छुट्टी लेकर उच्च धर्म संगत से लाभ उठाने तथा गुरु मिशन में सेवाकारी होने हेतु अपना आत्म कल्याण करते रहे। समय समय पर देव समाज के उच्च कर्मचारियों के अधीन प्रचार तथा दान एकत्र करने का काम पूरी लगन से करते रहे। धर्म विकासालय के अधिवेशनों में सम्मिलित होकर स्वयं लाभ उठाने के अतिरिक्त विकासार्थियों को उर्दू, अंग्रेजी, हिन्दी और विज्ञान की शिक्षा देने का काम भी बड़ी निपुणता से करते रहे। इन्हें महोत्सव की तैयारियों का काम भी श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी के अधीन करने का सौभाग्य प्राप्त रहा।

इनको अपनी नौकरी छोड़ने के विषय में श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी को लिखे पत्र का जो उत्तर मिला उसका कुछ भाग इस प्रकार है:-

"एक ओर आपके पत्र में प्रकाश किए हुए आपके भाव मेरे सम्मुख आते हैं और मेरे दिल को हिला देते हैं, वह पत्र मेरे पास है और अभी उसे पढ़ चुका हूं, मेरा दिल किसी प्रकार नहीं चाहता कि आपके आत्मा को कोई क्षण भी उच्च प्रभावों और उच्च कारज से अलग होकर गुज़ारने का अवसर मिले; दूसरी ओर आपकी वर्तमान इतनी बड़ी नौकरी सम्मुख आकर बार बार यह प्रश्न पैदा करती है कि बिना काफी तजुर्बे के उसे एक दम छोड़ देना दूरदर्शिता नहीं है। इसलिए बेहतर यही मालूम होता है कि आप किसी प्रकार दो वर्ष की या कम से कम एक वर्ष की और छुट्टी बिना वेतन प्राप्त कर लें और फिर निरन्तर उस काल में समाज के किसी बड़े काम पर अपने तई लगाकर अपने आपको सफल कार्यकर्त्ता प्रमाणित करें।"

श्रीमान् बख्शी जी को एक बार भगवान के श्री चरणों में सोलन जाने का अवसर मिला। उनके अपने शब्दों में "रास्ते में मोगा से लुधियाना में गाड़ी बदलती थी। वहां पर कुछ समय ठहर कर भगवान ने सायंकाल का भोजन किया। उन्होंने अपार कृपा करके अपने खाने में से कुछ भाजी मुझे भी दी। उस समय उनके इस प्रसाद को पाकर मैंने अपना कितना सौभाग्य अनुभव किया, उसे अब भी यह पंक्तियां लिखते हुए याद करके मेरा दिल गदगद हो रहा है।"

श्रीमान् बख्शी जी सोलन में नियम पूर्वक परम् पूजनीय भगवान देवात्मा की एक या दूसरी निजी सेवा का काम अपने जिम्मे लेकर इस साधन से अपना आत्म कल्याण करने लगे। इन्हें देव समाज के उस समय के सेक्रेटरी के साथ देव समाज का काम काज सम्भालने का अवसर मिला। इसे इन्होंने इतनी योग्यता के साथ निभाया कि पूजनीय भगवान इनके काम से प्रसन्न हुए और बाद में इन्हें देव समाज का सेक्रेटरी बनाया गया।

गुरु मिशन में जीवन भेंट

अब भगवान स्वयं एक लम्बे काल तक अपने ही श्री चरणों में रखकर इनकी अच्छी तरह परीक्षा ले चुके थे। 6 जुलाई 1912 का शुभ दिन था जब इनके सतत प्रयासो का सुंदर परिणाम इन्हें प्राप्त हुआ। इन्हें अपनी नौकरी से त्याग पत्र देने और अपने जीवन को समाज की सेवा में लगाकर

सफल करने का अवसर मिल गया। पूजनीय भगवान की ओर से नौकरी से त्याग पत्र देने की आज्ञा को पाकर उनकी खुशी की कोई सीमा न रही।

"मैं अपने आत्मिक कल्याण का मार्ग खुला हुआ देखकर फूला न समाता था। उसी दिन मैंने अपनी सरकारी नौकरी से त्याग पत्र लिख कर भेज दिया और परम् पूनजीय भगवान देवात्मा की सेवा में गहरे धन्यवाद के प्रकाश में एक पत्र लिखा जिसमें निवेदन किया कि "जैसे एक एक आयु भर के कैदी को उसकी कैद से छुटकारा मिल जाए, एक एक तोता जो पिंजरे में बन्द होने के कारण उड़ने के लिए फड़फड़ाता हो, परन्तु उससे बाहर निकलकर उड़ न सकता हो, उसका यदि पिंजरा टूट जाए, और वह खुले आकाश में लम्बी उडारियां लेने लगे, तो उसकी खुशी की कोई सीमा नही होती, वैसे ही आज आपकी अपार कृपा से जो मैं खुशी और सौभाग्य अनुभव कर रहा हूं उसका वर्णन नहीं हो सकता।"

देव समाज की 25 वर्षीय रजत जंयती के शुभ अवसर पर 25 दिसम्बर सन् 1912 को श्रीमान् रत्न चंद जी के जीवन अर्पण करने का अनुष्ठान किया गया। इस समय एक अत्यंत स्वर्गीय दृश्य और निराला वातावरण उत्पन्न हुआ। श्रीमान् बख़्शी जी के उद्गार हृदय स्पर्शी थे। आपकी वफ़ादार सहधर्मिणी (जो उच्च परिवर्तन लाभ कर चुकी थीं) के भाव भी अत्यंत सुंदर थे। उन्होंने फ़रमाया: "जिस प्रकार सीता जी ने रामचन्द्र जी का साथ दिया था उसी प्रकार मैं भी बख्शी जी का साथ दूंगी।"

दीनता, सम्मान और सहानुभूति के अति सुंदर भाव

श्रीमान् रत्न जौहर बहुत दीन स्वभाव के व्यक्ति थे। वह अपने से छोटों से भी बहुत सम्मान से बात करते थे और उनसे छोटी सी सेवा पाकर भी कृतज्ञ भाव का प्रकाश करते थे, उनकी भी सेवा कर देना चाहते थे और करते थे। उनकी दीनता का प्रभाव चारों ओर धर्म संबंधियों को भी एक नई दुनिया में पहुंचा देता था।

अत्यन्त शोक की बात है सन् 1936 ई० में उन्हें एक ऐसी बीमारी का सामना करना पड़ा जिसमें उन्हें अपनी एक टांग भी कटवानी पड़ी परन्तु उन दुखदायी हालातों में भी उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपने धर्म संबंधियों की शारीरिक सेवा उसी लगन और उत्साह से करते रहे।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के संबंध में श्रद्धा और कृतज्ञता आदि भाव

उनके कुछ पत्रों में से निम्नलिखित पंक्तियां श्री देव गुरू भगवान के संबंध में उनके श्रद्धा और कृतज्ञता आदि के सुन्दर और अत्यन्त मूल्यवान भावों को प्रकट करने वाली हैं:

"हे देव - इस महोत्सव के अवसर पर जो अति तेजस्वी और शक्तिशाली दिलों को हिला देने वाला उपदेश आपने देवात्मा के आविर्भाव और उसके लक्षणों आदि के विषय में दिया था और

संसार के मनुष्यों से अपनी पूर्णत: निराली देव प्रकृति के कारण उनके उद्धार और परम कल्याण के लिए आपको जिस जिस प्रकार का असह्य दुख सहना और अद्वितीय त्याग और संग्राम करना पड़ा और आपने एक बार मृत्यु - प्राय: अवस्था के समय अपने इस अद्वितीय जीवन व्रत के लिए सच्चे रहने की खातिर जो शब्द उच्चारण किए थे उनको सुनकर मेरी आंखों में अश्रुधारा बह रही थी। उस समय मेरा हृदय आपके अद्वितीय रूप पर बार बार बलिहार हो रहा था और मेरे भीतर ऐसी प्रबल इच्छा उत्पन्न होती थी कि मैं आपके इस देवरूप का सच्चा पुजारी और भक्त बन सकूं। मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई सौभाग्य नहीं। जितने अंश मेरा आपकी इस अथाह शक्ति के भण्डार देव रूप के साथ योग हो उतना ही मैं अपने और औरों के लिए हितकर बन सकता हूं, और आपके अद्वितीय कार्य के लिए सफल काम हो सकता हूं।"

1912 ई० में जीवन भेंट करने के बाद

श्रीमान् जी लगभग 38 वर्षों तक बड़े तप, त्याग और ज़िम्मेदारी से देव समाज की सेवा करते रहे। अनेक वर्षों तक वह देव समाज के सेक्रेटरी रहे। जैसा ऊपर बताया गया है कि 1936 ई० में उन्हें अपनी टांग कटवानी पड़ी थी उसके पश्चात् लगभग 14 वर्ष तक उन्होंने एक टांग के साथ ही जिस हिम्मत, उत्साह, लगन और आत्म त्याग के साथ परम् पूजनीय भगवान देवात्मा के मिशन में सेवाकारी होने का दुष्टांत प्रस्तुत किया वह हम सबके लिए अनुकरणीय है।

हमारे परिवार पर श्रद्धेय श्रीमान् बख्शी रत्न जी का महानतम उपकार

आज जो हमारा परिवार परम् पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ अति तुच्छ संबंध रख पाया है और गुरु मिशन की कुछ भी सेवा कर पाया है उसमें श्रीमान् बख्शी जी का इतना बड़ा योगदान और उपकार है कि उसे याद करके हृदय भाव विभोर हो उठता है। आंखों से आंसु छलक उठते हैं। मेरे श्रद्धेय पिता श्रीमान् प्रेम बल जी खेड़ा उन्हीं के कारण सारी आयु देव समाज की सेवा में रत रहे। देव समाज की भीतर की भी अत्यन्त कठिन परिस्थितियों, जिनका विवरण यहां देना उचित नहीं है, में भी श्रीमान् बख्शी जी की आज्ञा पालन करके और उनके निर्देश में चलकर उन्होंने भगवान के प्रति असाधारण निष्ठा का परिचय दिया। इसके परिणाम स्वरूप हमारा परिवार संसार की भस्म कर देने वाली नीच अनुरागों की अग्नि से एक सीमा तक बच पाया और कुछ सेवाकारी बन पाया। श्रीमान् प्रेम बल जी खेड़ा ने अपने स्वलिखित जीवन चरित्र में श्रीमान् बख्शी जी के संबंध में जो कुछ लिखा है उसे उनके ही शब्दों में हम धर्म जीवन के अक्तूबर अंक में देने का इरादा रखते हैं।

(शेष भाग धर्म जीवन के अगले अंक में)

— — — —

पशुओं के प्रति मनुष्यों के दुराचार

धर्म विषयक नाना शक्तियों से विहीन, वासना और उत्तेजना शक्तियों के अधीन और मिथ्या विश्वासों में लिप्त मनुष्यों के लिए विश्व के नाना अस्तित्वों के सम्बन्ध में अन्याय अथवा पाप वा अपराध मूलक आचार करना एक अवश्यम्भावी बात है - अवश्यम्भावी बात है, इसीलिए ऐसे मनुष्य विश्व के विविध विभागों के सम्बन्ध में नाना प्रकार के दुराचार करते हैं। ऐसे मनुष्य औरों के भिन्न पशुओं के सम्बन्ध में जिस - जिस प्रकार के दुराचार करते हैं, वह यह हैं: -

(1) जिघांसा भाव की तृप्ति के लिए किसी जन्तु को अकारण क्लेश पहुंचाना, आहत (ज़ख्मी) वा वध करना: - यथा किसी टिड्डे की आंखें फोड़ना, पक्षियों के अंडे तोड़ना, किसी को यों ही ढेला वा सोंटा आदि मार कर आहत वा वध करके ख़ुश होना।

(2) कौतुक भाव की तृप्ति के लिए एक वा दूसरे प्रकार के पशुओं को आपस में लड़ाकर तमाशा देखना: - यथा मुर्गों को लड़ाना, बटेरों को लड़ाना, लालों को लड़ाना, बुलबुलों को लड़ाना, मेढ़ों को लड़ाना, सांडों को लड़ाना, शेरों को लड़ाना आदि।

(3) मांस खाने के लिए नाना प्रकार के पशुओं को वध करना: - यथा भेड़ों, बकरों, गौवों, हिरनों, ऊंटों, सुअरों, घोड़ों, मछलियों, मुर्गियों, तीतरों, कबूतरों और नाना प्रकार के अन्य जीवों को वध करना वा कराना।

(4) शिकार के लिए नाना पशुओं का वध करना।

(5) धन प्राप्ति के लिए नाना जातियों के पशुओं को आहत वा वध करना: - यथा, रेशम के लिए करोड़ों कीड़ों की हत्या, खाल और तन्द्री के लिए कितने पशुओं की हत्या, चर्बी और तेल के लिए कितने ही पशुओं की हत्या, सुन्दर परों के लिए कितने ही पक्षियों की हत्या; इत्यादि।

(6) मिथ्या विश्वास के वशीभूत होकर कल्पित ईश्वर और अन्य देवी देवतों की प्रसन्नता लाभ करने के लिए बकरे, भेड़, मुर्गे, ऊंट और भैंस आदि की बलि करना।

(7) अनुचित वैज्ञानिक परीक्षा के लिए कितने ही जीवित पशुओं के एक वा दूसरे अंग को काट कर उन्हें भयानक यंत्रणा देना और ऐसी यंत्रणा दे देकर अनेक बार उनके प्राण लेना।

(8) पशुओं की पीड़ा वा हत्या की ओर से कठोर चित्त और बेसुध रहकर मार्ग में कितने ही प्रकार के कीड़ों को पैरों से कुचलते चले जाना।

उपरोक्त दुराचारों के भिन्न कितने ही मनुष्य

अपने आश्रित नाना पशुओं के सम्बन्ध में निर्दयता - मूलक जो - जो और अत्याचार करते हैं, वह यह हैं: -

(1) कितने ही लोग फूंका देकर वा मार पीटकर दूध देने वाले पशुओं से दूध प्राप्त करते हैं।

(2) कितने ही लोग दूध देने वाले पशुओं का दूध दोहने के समय उनके छोटे - छोटे बच्चों के लिए यथेष्ट दूध नहीं छोड़ते।

(3) कितने ही लोग पैसों का बचाव करने के लिए अपने आश्रित पशुओं को ऐसी चीज़ें खाने को देते हैं कि जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं।

(4) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं को काफ़ी ख़ुराक नहीं देते।

(5) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं को उचित समय पर आहार और जल नहीं देते और कितनी - कितनी देर तक उन्हें भूखा और प्यासा रखकर क्लेश देते हैं।

(6) कितने ही लोग धन आदि के लालच से अपने आश्रित पशुओं से उनकी योग्यता से बढ़कर काम लेते हैं

(7) कितने ही लोग अपने बोझा उठाने वाले आश्रित पशुओं पर उनकी योग्यता से बढ़कर उन पर बोझा लादकर वा जिस वाहन को वह खैंच रहे हों, उस पर बोझा बढ़ा कर उन्हें क्लेश पहुंचाते हैं।

(8) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं और उनके वास स्थानों को मैला रख कर उन्हें हानि पहुंचाते हैं।

(9) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं की चीचड़ियों आदि दुष्ट कीड़ों से रक्षा नहीं करते और वह उनका ख़ून पी - पी कर उन्हें क्लेश देते रहते हैं।

(10) कितने ही लोग अपने किसी आश्रित पशु के बहुत निर्बल और अयोग्य होने पर भी उसे मार - मार कर और उसकी पूंछ आदि मरोड़ - मरोड़ कर और उसे बहुत यंत्रणा देकर उससे काम लेते हैं।

(11) कितने ही लोग अपने किसी आश्रित पशु के थोड़े से अपराध पर उसे बहुत क्लेश दायक सज़ा देते हैं।

(12) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं को बूढ़े, बीमार, जख़्मी और विकलांग हो जाने पर भी विश्राम नहीं देते और उनसे काम लेते हैं।

(13) कितने ही लोग अपने आश्रित पशुओं को बूढ़े अथवा किसी और कारण से काम के अयोग्य हो जाने पर घर से बाहर निकाल देते हैं, और उनकी कोई सेवा नहीं करते।

(14) कितने ही लोग अपने सेवाकारी और हितकारी पशुओं को धन के लालच से क़साईयों के हाथ बेचकर उन्हें वध करा देते हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

पशु जगत् से हम है आए...

(परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित गीत)

पशु जगत् से हम है आए, उस को अपना जानेंगे;
उस के संग संबंध अपना, निश्चय हम पहचानेंगे। 1

पशु जगत् को लाके सम्मुख, मन में हम यह ठानेंगे;
उस अपेक्षा नीचे जीवन, हम कभी नहीं धारेंगे। 2

पशु जगत् में जो हैं सद्गुण, उन को भी हम जानेंगे;
करके दिन-दिन ग्रहण उनको, उच्च होते जाएंगे। 3

अपने आश्रित जन्तुओं को, आत्म-वत् हम पालेंगे;
और किसी को भी अकारण, क्लेश नहीं पहुंचाएंगे। 4

जो हैं हितकारी पशु, हित उनका सम्मुख लाएंगे;
करके हित हम उन का साधन, धन्य बनते जाएंगे। 5

परलोक व्रत पर विशेष

मृत्यु के समय सूक्ष्म शरीर कैसे बनता है? (एक वैज्ञानिक का अनुभव)

एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक जॉन लौब एफ.आर.एस.सी. अपनी पुस्तक में बताते हैं कि मृत्यु के समय मनुष्य का सूक्ष्म शरीर कैसे बनता है। उनके एक साथी इस विषय में लिखते हैं- मैंने अपने सामने कितने आदमियों को बिस्तरों पर मरते हुए देखा है। मेरे अन्दर सूक्ष्म शरीरों को देखने की योग्यता है। मान लो एक आदमी मर रहा है तो मैंने देखा कि पहले उसके पांव ठंडे होते जा रहे हैं और उसके सिर की ओर कुछ सूक्ष्म मसाला इकट्ठा होता जा रहा है। धीरे धीरे उसका शरीर घुटनों तक ठंडा हो जाता है और सूक्ष्म मसाला उसके पास वायु में इकट्ठा होता रहता है। अब उसकी भुजाएं और कंधे भी ठंडे हो गए हैं और सूक्ष्म मसाला और भी अधिक मात्रा में उसके सिर के पास इकट्ठा हो गया है। अब उस व्यक्ति का सांस लेना बंद हो गया है और एक मानव शक्ल धुंधली सी उसके सिर के पास दिखाई देती है। यह उसके सिर के पास एक बारीक धागे से जुड़ी हुई है और उसका चेहरा साफ़ दिखाई देने लगता है। शरीर के सारे अंग पांव से लेकर सिर तक निर्मित हो जाते हैं। बारीक धागा अभी सिर के साथ जुड़ा हुआ है, जब यह धागा टूट जाता है तो सूक्ष्म शरीर लाश को छोड़कर अलग हो जाता है और कुछ देर में लोप हो जाता है।

परलोक (सच्चाई की रोशनी मे) पृष्ठ 1 से उद्धृत

मल्लेका सत्संग

01.08.2021

पहली सभा शाम 5 बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सर्वप्रथम सभापति जी ने हाजरीन का दिली भावों से धन्यवाद किया जो इन हालातों में भी सभाएं सुनने के लिए आए। पहले एक भजन का गान किया गया, फिर सभापति जी ने बताया कि देव समाज में बहुत विद्वान हस्तियां हुई हैं जिन्होंने गुरु मिशन में जीवन लगाया। उन्होंने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी और श्रद्धेय श्रीमान कनल जी के महान जीवन का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि हम तो उन जैसे पढ़े लिखे भी नहीं हैं, हमें सौभाग्य से यह दर मिल गया, जिससे बड़े बड़े विद्वान वंचित हैं। हमें आत्मा का ज्ञान मिला है, जो किसी धर्म मत में जाकर भी आपको मिल नहीं सकता। हम ज्ञान पाकर भी आत्मा के प्रति बेसुध हैं। देव समाज के वातावरण के बाहर यह भी नहीं पता कि मनुष्य पाप क्यों करता है? अच्छे काम क्यों करता है? हमें यह ज्ञान मिला है कि मनुष्य अपने भावों से परिचालित होकर भले वा बुरे कर्म करता है। यह अच्छे वा बुरे भाव कहां से आते हैं? यह जानना धर्म का काम है।

श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी फरमाते थे कि आप प्रचार पर जाते हो, अपना स्वार्थ बढ़ाकर न आ जाना। अपना वा दूसरों का भला करके आना।

कनल जी फरमाते थे कि यूनीवर्सिटी की उच्च शिक्षा पाकर भी यदि गुरु की संगत न मिलती तो अन्धे का अन्धा ही रह जाता। इस संगत में पता लगता है कि यदि हमारी श्रद्धा, कृतज्ञता, ईमानदारी और हमदर्दी बढ़ती है, तो कुछ भला होता है। नहीं तो सभा करना वा सुनना भी व्यर्थ जाता है। हमारा नाश वा विकास दूसरों के साथ व्यवहारों से जुड़ा हुआ है।

अन्त में श्रीमान जी ने उच्च कर्मचारियों की छवियों को देखकर यह सतरें बोली: -

"देवगुरु के सेवको, मेरे प्यारे साथियो,
तुम जो आगे बढ़ गए, मुड़ देखना पीछे ज़रा,
धर्म संबंधी कोई तुम को पुकारे साथियो।

02.08.2021

दूसरी सभा 9½ बजे सुबह

सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने फरमाया: - भजन में हमने ज्योति मांगने की प्रार्थना की है। ऐसी ज्योति जिसमें हमें अपने

अच्छे अंग भी नज़र आएं, परन्तु बुरे अंग और व्यवहार भी नज़र आएं पर हमारा अहं यह दिखने नहीं देता।

ज्योति पाने का मुख्य साधन पूजनीय भगवान देवात्मा से उनके प्रभावों को पाने के लिए प्रार्थनाशील होना, अपनी कमियों को लिखना, जिससे अहं घटे, यह मुख्य साधन है।

उन्होंने बहुत से धर्म सम्बन्धियों का ज़िकर किया जिन्होंने इस ज्योति को पाने के साधन किए और पापमय ज़िन्दगी से उद्धार पाया। प्रत्येक मनुष्य भीतर से कैसा है, उसकी सोच, चिताएं वा क्रियाएं क्या हैं, यदि हमारा वीडियो बन जाए तो हम किसी को मुंह दिखाने के योग्य न रहें।

श्रीमान जी ने बताया कि धार्मिक बनने के लिए हमें सब सम्बन्धों में अपने अपने कर्तव्य नज़र आएं। दूसरों का हक अपहरण न हो, इस प्रकार की घटनाओं का ज़िकर किया।

शाम की एक सभा

नीच घृणा के विषय में करवाई। नीच घृणा क्यों पैदा होती है। जब हमारी किसी भी सुखदायक इच्छा वा क्रिया पर चोट लगती है, तो नीच घृणा पैदा होती है। कहने वाला चाहे हमारा कितना भी बड़ा उपकारी वा हितकारी क्यों न हो, वह हमें अपना शत्रु नज़र आता है। नीच घृणाकारी का कहीं भी भला नहीं हो सकता। गुरु महाराज की ज्योति में ही हमें इस नीच घृणा भाव की अपनी घटनाएं दिखाई दे सकती हैं।

03.08.21

सुबह 9½ बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि देव समाज में आकर ही हमें पता लगता है कि हमें हमारे भाव चलाते हैं, कोई कहलाने वाला परमात्मा या देवी देवता नहीं।

दूसरी बात कि हमारी कोई भी क्रिया नेचर में व्यर्थ नहीं जाती, या तो वह हमें अच्छा बनाती है या बुरा। हमदर्दी का भाव हमें दूसरों के दुख दिखाएगा, ईमानदारी हमें बेईमानी करने से रोकेगी। श्रद्धा का भाव दूसरों का महान कार्य दिखाएगा, शुक्रगुज़ारी उपकारियों का उपकारी रूप दिखाकर उनके लिए सेवाकारी बनाएगी। भामाशाह ने कैसे अपना सब कुछ बेचकर महाराणा प्रताप को दिया कि आप इस धन से दुबारा फौज इकट्ठी करो और लड़ो। महाराणा के मना करने पर कृतन हृदय ने उत्तर दिया कि "महाराज, यह सब आपका ही दिया हुआ है। उसके बाद श्रीमान जी ने शुक्रगुज़ारी के कई उदाहरण पेश किए। श्रीमान जी ने कहा कि कृतज्ञन बच्चों के होते ही माता

पिता वृद्ध आश्रम में धक्के खाते हैं। कनल जी ने लिखा है कि M.A.LL.B की डिगरी लेते हुए मुझे सब टीचरों, माता पिता, किसानों, जुलाहों तक के उपकार सामने आने लगे, जिन सबकी सेवा से मैं यहां तक पहुंचा हूं। कल्याण में हमारे सेवक बलजीत सिंह जी ने माता पिता की सेवा का रिकार्ड बना दिया है। कृतज्ञन अर्थात न शुकरगुज़ार होना महा पाप है।

03.08.21

शाम 5 बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने बताया कि देव धर्म विज्ञान मूलक धर्म है। असम्भव बातें जो और धर्म मानते हैं, उससे देव धर्म कतई सहमत नहीं। गुरु महाराज के पास एक औरत आशीर्वाद मांगने आई कि मेरी बहू के बच्चा नहीं होता, आप उसको बच्चा होने का आशीर्वाद दें। गुरु महाराज ने स्पष्ट किया कि हमारे आशीर्वाद से तो क्या किसी के भी आशीर्वाद से बच्चा नहीं हो सकता, यह सम्भव नहीं, किसी अच्छे डाक्टर को दिखाएं। गुरु महाराज सच्चाई के प्रेमक थे, मिथ्या के नहीं।

अपने सत्य अनुराग की रोशनी में ही उन्होंने आत्मा के स्वरूप को देखा, उसके रोगों को देखा और उनको दूर करने की शिक्षा दी।

कैसे ईर्षा भाव के कारण मनुष्य को सगे भाई की अच्छी फसल होने से भी जलन होती है।

धन अनुराग से प्रेरित होकर एक लैक्चरर ने अपनी पत्नी से गिलास टूटने पर उसे पीटा। सभापति जी ने अपनी एक घटना सुनाई कि एक लड़का जिसने गाली निकाली थी, उसको कैसे पीटा, सत्संग में बैठ कर अपना अहं नज़र आया।

श्रीमान नौध सिंह जी जो धन अनुराग से प्रेरित होकर हेराफेरी करते थे, बेईमान थे, उनको पूर्ण ईमानदार बना दिया। लड़कियों के प्रति पवित्र बना दिया। कृतज्ञता से भरकर एक एक उपकारी की इतनी सेवा करने लगे। धन अनुराग ने श्रीमान राम सिंह जी को दरिंदा बना दिया। एक कुत्ता आटा खा गया, उससे अपनी पत्नी के प्रति इतनी नीच घृणा पैदा हुई कि तुमने ध्यान क्यों नहीं दिया। वही राम सिंह जी ने पत्नी की इतनी सेवा की कि एक उदाहरण पैदा कर दी।

इस प्रकार इन सभाओं की समाप्ति हुई। धर्म सम्बन्धियों ने अपनी अपनी योग्यता अनुसार लाभ उठाया।

— — — —

प्रेरणादायक घटनाएं

सच्ची सम्पत्ति

अमरीका के प्रसिद्ध धन कुबेर राकफैलर से एक बार पत्रकार ने प्रश्न किया कि आपके पास कितनी सम्पत्ति होगी? एक पल सोचकर राकफैलर बोले, "सही सही कह सकना मुश्किल है, मगर मेरे विचार में 30 - 40 हज़ार डालर से अधिक की नहीं है"

क्या कह रहे हैं आप? पत्रकार ने विस्मय से पूछा "मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं"

इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाते, पत्रकार बोला, "अपार धन राशि के स्वामी होकर आप अपनी सम्पत्ति केवल 30 - 40 हज़ार डालर बता रहे हैं।" राकफैलर "मैं ठीक कह रहा हूं, धन तो मेरे पास बहुत है, मगर सम्पत्ति केवल 30 - 40 हज़ार डालर है क्योंकि मनुष्य की सम्पत्ति तो वही होती है जिसका उपयोग परसेवा परमार्थ में हुआ हो और जहां तक मुझे याद है इस हिसाब से मेरी सम्पत्ति उतनी ही है, जितनी मैंने बताई है।

लिंकन का फार्मूला

अमेरिका में ग्रह युद्ध चल रहा था और राष्ट्रपति थे अब्राहम लिंकन। एक दिन लिंकन सैनिकों के शिविर में घायल सैनिकों को देखने गए। उस समय घूमते हुए वह शत्रु सैनिकों के शिविर में भी चले गए, उनसे उन्होंने बड़े स्नेह से बात की। एक वृद्धा ने कहा कि "आप तो शत्रुओं से प्रेम पूर्वक बात करते हो जबकि चाहिए तो यह था कि आप उन्हें ख़त्म कर देते।" वृद्धा की बातें सुनकर लिंकन मुस्कराए, फिर बोले, "यह काम मैं उन्हें मित्र बनाकर भी तो कर सकता हूं। उन्हें मित्र बनाकर दुश्मनी ख़त्म करना ज़्यादा आसान है।

- - - -

बच्चों का कॉर्नर

भगवान देवात्मा के जीवन से-3

एक अबला बुढ़िया को अपनी गाड़ी पर बिठा लेना

एक दिन भगवान देवात्मा मामूली सैर करके घर को वापिस आ रहे थे। हठात् उनकी दृष्टि एक ऐसी दरिद्र बुढ़िया पर पड़ी कि जो सड़क पर बहुत कठिनता से धीरे धीरे जा रही थी। रोग ने उसे बहुत जीर्ण और दुर्बल कर दिया था। दुर्बलता के कारण उसकी कमर झुक गई थी। उसके मुंह पर रोग और थकावट के चिन्ह प्रकाशित थे। उसके कपड़े फटे हुए थे। वह नितान्त दुख की अवस्था में अकेली जा रही थी। कोई उस की सहायता के लिए उसके साथ न था। दयासागर ने उसकी दुखिया अवस्था को अनुभव किया। उनका हृदय उस असहाय बुढ़िया के लिए सहानुभूति के भाव से भर गया। उसे ऐसे दुख की अवस्था में देखकर उन के लिए आप चुपचाप गाड़ी पर सवार होकर उसके पास से गुज़र जाना असम्भव हो गया। आपने अपनी गाड़ी खड़ी कर ली और अपनी कोमल वाणी से उस बुढ़िया से पूछा, कि वह किधर जाना चाहती है? दरिद्र बुढ़िया एक महत् जन से ऐसा प्रश्न सुन कर पहले तो वह आश्चर्य रह गई, परन्तु महाराज जी के यह बताने पर कि वह उसे गाड़ी पर बिठाकर, जहां उसे जाना हो, वहां पहुंचा देना चाहते हैं, उसने अपने स्थान का पता बता दिया। उस पर कृपा सागर ने उसे गाड़ी पर बिठा लिया, और आज्ञा दी कि देवाश्रम में जाने से पहले बुढ़िया को उसके स्थान के समीप उतार दिया जाए। उनकी आज्ञानुसार ऐसा ही किया गया और वह बुढ़िया कृपालु देव की कृपा से सुख सहित अपने ठिकाने पर पहुंच गई।

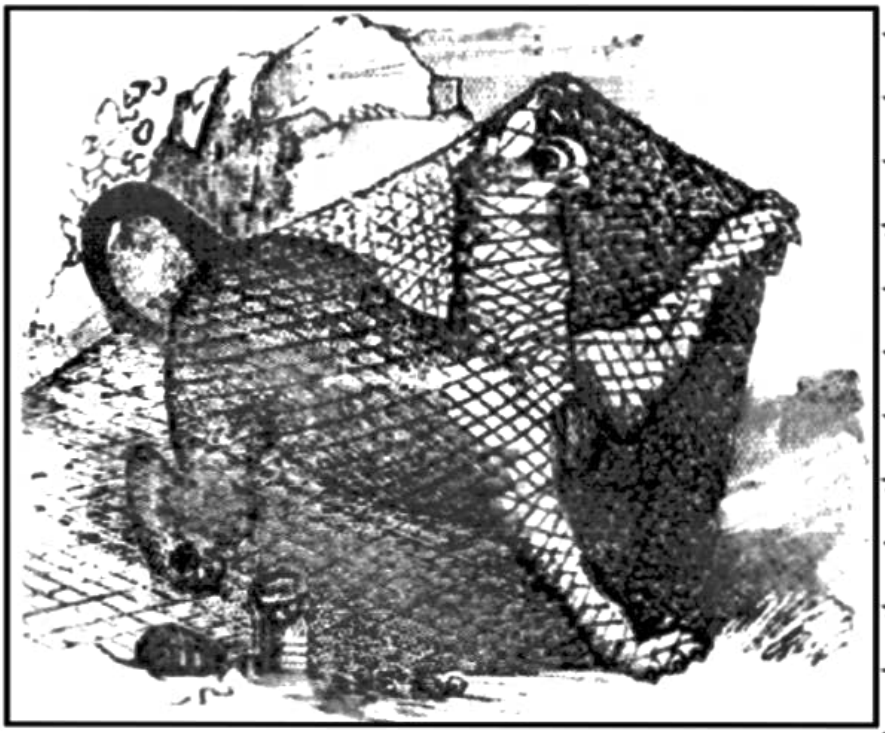
चूहे और बाघ की कहानी

भगवान देवात्मा द्वारा रचित कथा संग्रह पाठ बोध से जिसे अमृत की बूंदे नाम से प्रकाशित किया गया है

किसी पहाड़ की कन्दरा (गुफ़ा) में एक बाघ सोया हुआ था। एक चूहा वहां से निकला और उसके ऊपर से कूदकर चला गया। बाघ की आंख खुल गई, और उसने चूहे की ओर घूर कर कहा, "अरे दुष्ट! तू छोटा सा जीव, और मैं इस जंगल का राजा! तेरी इतनी स्पर्धा कि तूने मेरा अपमान किया! ठहर, अभी तुझे मक्खी की न्यांई मल कर परे फैंक देता हूं।" बाघ के इन शब्दों को सुनकर चूहा बहुत डरा, और हाथ जोड़कर दीन भाव से बोला, "श्री महाराज! निःसंदेह मुझसे बहुत बड़ा अपराध हुआ। परन्तु मुझे पता न था कि आप यहां सोए हुए हैं। मुझसे अनजाने और घबराहट में ऐसा अपराध हो गया। आप कृपा करके क्षमा करें। आपके सामने मैं कुछ वस्तु नहीं। आप चाहें तो क्षण भर में मुझे ध्वंस

कर सकते हैं। परन्तु मुझ जैसे तुच्छ जीव को मारने से आपकी कुछ महिमा न समझी जाएगी। यदि आप मुझे प्राण दान देंगे, तो मैं भी किसी दिन आपकी कोई न कोई सेवा करके कृतार्थ होने का अवसर लाभ कर सकता हूं।"

व्याघ्र उसकी इस दीनता से प्रसन्न हो गया; और उसने उसका अपराध क्षमा कर दिया। चूहा प्रणाम करके चला गया।



एक दिन ऐसा हुआ, कि एक बधिक (शिकारी) ने उस जंगल में आकर अपना जाल फैलाया। बाघ उधर से निकला और बेसुधी से उस जाल में फंस गया। इस विपद् में पड़कर वनराज_बहुत घबराया और उच्च शब्द के साथ दहाड़ने लगा। उसका यह आर्तनाद चूहे के कान तक पहुंचा। चूहे ने समझा कि यह शब्द किसी और का नहीं, किन्तु उसी के अनुग्रहकारी बाघ का है। वह झट अपने बिल से निकला, और दौड़कर उस जाल के पास पहुंचा, कि जिसमें शेर फंसा हुआ था। चूहे ने पहले उसे प्रणाम किया, और फिर अपने उपकारी को धैर्य देने के लिए कहा,"महाराज! घबरायें नहीं, मैं आप के उपकार को भूल नहीं गया। आपने एक समय मेरे प्राण बख्शे थे। अब मैं भी आपके हित के लिए जो कुछ कर सकता हूं, वह करता हूं।" इतना कहकर चूहे ने जाल काटना आरम्भ किया। थोड़ी देर में जाल कट गया, और व्याघ्र उछल कर उससे बाहर निकल आया। छोटे से चूहे की सहायता से व्याघ्र (शेर) के प्राण बच गए। तुच्छ चूहे की यह सेवा कितनी बड़ी सेवा! उसकी यह सहायता कितनी बड़ी सहायता!! बाघ उसकी इस बहुमूल्य सहायता के लिए बहुत अनुग्रहीत हुआ, और उसे धन्यवाद देकर वहां से चला गया।

उपदेश

छोटे से छोटे जन का भी भला करना उचित है। एक समय किसी तुच्छ जन के द्वारा भी किसी का इतना बड़ा उपकार हो जाता है कि जिसकी तुलना नहीं हो सकती।

मज़ेदार बूझो तो जानें

1. पैर नहीं है, पर चलती रहती हूं। दोनों हाथों से अपना मुंह पूछती रहती हूं।
2. कान है पर बहरी हूं, मुंह है पर मौन हूं, आंखें हैं पर अंधी हूं, तब आखिर बताओ मैं कौन हूं?
3. काली है पर काग नहीं, लंबी है पर नाग नहीं, बल खाती हूं पर रस्सी नहीं, बांधते हैं पर डोर नहीं?
4. काले वन की रानी हूं, लाल पानी पीती हूं?

उत्तर 1. घड़ी 2. गुड़िया (Doll) 3. बालों की चोटी (Coil of a woman's hair) 4. खटमल

ज़रा हँस लो खिल खिलाकर

1. मंगल और शनि आदि ग्रहों की दशा और दुर्दशा बताने वाले ज्योतिषाचार्य जी रेलवे इंक्वायरी में पूछते हैं। "ट्रेन कब आएगी?"

2. एक मच्छर परेशान बैठा था। दूसरे साथी मच्छर ने पूछा - भाई क्या हुआ तुझे? तू इतना परेशान क्यों है? पहला बोला - "यार गज़ब हो रहा है। चूहेदानी में चूहा! साबुनदानी में साबुन! मगर मच्छरदानी में आदमी सो रहा है"

3. गली से आवाज़ आई "400 रुपये में सारी उमर बैठ के खाओ" बाहर निकल कर क्या देखा? "जनाब कुर्सी बेच रहा है"

4. एक व्यक्ति के पड़ोस में सत्यनारायण कथा की आरती हो रही थी, आरती की थाली उस व्यक्ति के सामने आने पर उसने अपनी जेब में से छांट कर कटा फटा दस रुपये का नोट ऐसे डाला कि कोई देखे नहीं। उस स्थान पर ठसाठस भीड़ थी। उस व्यक्ति के कंधे पर ठीक पीछे वाली आंटी ने थपकी मार कर उनकी ओर 2000 रुपये का नोट बढ़ाया। उस व्यक्ति ने यह समझकर कि आंटी उसे 2000 का नोट दान पात्र में डालने के लिए कह रही है, उस आंटी से नोट लेकर आरती की थाली में डाल दिया। उसे आरती की थाली में अपने 10 रुपये डालने पर थोड़ी लज्जा भी आई। बाहर निकलते समय उसने उस आंटी जी को श्रद्धा पूर्वक नमस्कार किया। तब आंटी ने उसे बताया कि "10 का नोट निकालते समय आपका 2000 का नोट जेब से गिरा था, वो ही मैंने आपको वापिस किया था।"

अफ़सोस तो इस बात का है कि वह व्यक्ति रात से कुछ भी खा नहीं रहा है और न ही सो पाया है।

5. लाउड स्वीकर पर ढिंढोरा पीटा जा रहा था: सुनो, सुनो, सरकार का बहुत बड़ा फैसला। सरकार ने सोना बिल्कुल फ्री कर दिया!!!

"सुबह सोना, दोपहर को सोना, रात में सोना और जब भी दिल करे तब सोना!!!"

- - - -

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सेवा प्रसंग

गुल्लक अभियान से 26 मरीज़ों की आर्थिक मदद

(दैनिक भास्कर से साभार)

मदद सिर्फ़ धन से नहीं होती, इच्छाशक्ति से भी होती है। पांच साल पहले ओडिशा में पेंटिंग का काम करने वाले नारायण चंद्र ओझा के मन में कैंसर मरीज़ों की सहायता करने का ख्याल आया। खुद ओझा की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन इच्छाशक्ति प्रबल थी। ओझा ने अपनी जमापूंजी तो दान कर दी, लेकिन आगे और मदद करने के लिए चैरिटी का सहारा लिया। उन्होंने प्रायोगिक तौर पर सार्वजनिक स्थान पर एक गुल्लक (मिट्टी की हुंडी) रख दी। तीन महीने में उसमें महज 5700 रुपए ही जमा हुए, लेकिन ये नेक काम की शुरुआत भर थी। अब ओझा के इस काम की पूरे प्रदेश में तारीफ़ हो रही है, लोग उन्हें 'बापू ओझा' के नाम से पुकारने लगे हैं। ओझा पिछले पांच साल से प्रदेश में गुल्लक के जरिए ही चैरिटी के मिशन पर है। आज उनकी गुल्लक में पचास हजार रुपए तक इकट्ठे हो जाते हैं। इसे अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और आम लोगों के सामने फोड़ा जाता है और फिर इस राशि को वह जरूरतमंद कैंसर मरीज़ों और उनके परिजनों को सौंप देते हैं।

ओझा बताते हैं कि 2017 में उन्होंने कटक के एक कैंसर अस्पताल के बाहर एक पीड़ित महिला को बच्चे के साथ बिलखते हुए देखा था। महिला बीमारी से और उसके 6-8 साल के दो बच्चे भूख से बिलख रहे थे। ओझा ने उनसे तकलीफ और परिवार की माली हालत जानी। उन्हें लगा कि ऐसे कई ज़रूरतमंद कैंसर मरीज होंगे जिनके पास इलाज, दवा व खाने तक के लिए पैसे नहीं होते हैं। फिर उन्होंने ऐसे लोगों की मदद करने की पहल शुरू की। भुवनेश्वर में भीड़भाड़ वाले

शेष पृष्ठ 2 पर

श्रीमान् बलदेव सिंह जी, एम.ए., (लाईफ वर्कर) मंत्री - **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिसर और मालिक **"धर्म जीवन"** ने **Collective Printers, Chandigarh** से छपवाकर म.नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Post